प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

कला मुश्किल काम है, क्योंकि यह आप अपने लिए करते हैं। मेरे लिए स्मारकों की तुलना में यह कठिन है...
- माया लिन

अमेरिकी वास्तुकार और कलाकार

तीन साल पहले तमिलनाडु की दो विधानसभा सीटों पर चुनाव रद्द करने के बाद अब वेल्लोर लोकसभा सीट पर चुनाव रद्द होने का फैसला बताता है कि वहां मतदाताओं में पैसे बांटने का खेल किस तरह बढ़ गया है। पर क्या चुनाव रद्द करना ही इसका समाधान है?

चुनाव में पैसे का खेल

तमिलनाडु की वेल्लोर लोकसभा सीट पर चुनाव रद्द होने का फैसला बताता है कि चुनाव आयोग की सख्ती के बावजूद यह राज्य पैसे देकर वोट खरीदने की अपनी कुख्यात छवि से मुक्त नहीं हो पा रहा। वेल्लोर में द्रमुक के कोषाध्यक्ष दुरुई मुरुगन के एक सहयोगी के यहां से करीब 11.50 करोड़ की बरामदगी के बाद यह कदम उठाया गया है, जबकि वहां से दुरुई मुरुगन के बेटे ही प्रत्याशी थे। गौरतलब है कि इसी कारण 2016 में राज्य की दो विधानसभा सीटों पर चुनाव रद्द हुए थे। तमिलनाडु अकेला राज्य है, जहां की सभी लोकसभा सीटों को खर्च के लिहाज से संवेदनशील घोषित किया गया है। आचार संहिता लागू होने के बाद वहां अब तक करीब 135.42 करोड़ रुपये की नकदी पकड़ी गई है। 1,022 किलो सोना और 645 किलो चांदी पकड़ी गई है, जिसकी कीमत 294.38 करोड़ रुपये है। ऐसे ही 8.15 करोड़ के कुकर, कपड़े और अन्य उपहार भी जब्त किए गए हैं। कोयंबटूर में अन्नाद्रमुक कार्यकर्ताओं को पैसे बांटते हुए गिरफ्तार किया गया है। राज्य में यह दुष्प्रवृत्ति इस तरह जड़ जमा चुकी है कि कमल हासन की सभाओं में मतदाता खुलेआम बख्शीश की मांग करते सुने गए हैं! ऐसे में, सिर्फ चुनाव रद्द करना समाधान नहीं है। तमिलनाडु में पैसों से वोट खरीदे जाने की एक याचिका पर सुनवाई करते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने चुनाव आयोग से पूछा भी है कि वह राजनीतिक पार्टियों के खिलाफ क्या कदम उठा रहा है। दूसरी तरफ, तूतीकोरिन से द्रमुक की प्रत्याशी कनिमोझी के घर पर आयकर छापे मारे जाने और कुछ न मिलने पर विपक्ष ने जिस तरह केंद्र की आलोचना की है, वह भी ध्यान देने लायक है। पूर्व प्रधानमंत्री देवगौड़ा के पौत्रों के चुनाव क्षेत्रों में भी आयकर छापे मारे गए। हालांकि मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री के करीबियों के यहां मारे गए छापों में करीब नौ करोड़ की बरामदगी हुई थी। पर पिछले छह महीने में आयकर विभाग ने विपक्षी नेताओं और उनके सहयोगियों के यहां करीब 15 छापे मारे हैं, जिस पर विपक्ष ने केंद्रीय एजेंसियों पर केंद्र के हित में काम करने का आरोप लगाया है। खुद चुनाव आयोग ने भी पिछले दिनों केंद्रीय राजस्व सचिव और सीबीडीटी से नाराजगी जताते हुए निष्पक्षता की जरूरत बताई थी। ऐसे में, बेहतर तो यही होगा कि चुनावों के दौरान तमाम केंद्रीय एजेंसियों को चुनाव आयोग के अधीन कर दिया जाए।

खंडित युग में एक गिरजाघर का जलना

नात्रो दाम की कहानी धीरज और पुनर्जन्म की कहानी है। यह यूरोपीय सभ्यता की भी कहानी है। यह इतना नाजुक था, जिसका एहसास अब हुआ है, इसलिए यूरोप को इस समय एकजुटता दिखाने की जरूरत है।

रोजर कोहेन

पेरिस का नात्रो दाम, वह जगह है, जहां से फ्रांस में दूरियां मापी जाती हैं, जिसका लोग आरंभ या अंत के रूप में संदर्भ देते हैं, जैसा कि राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रां इसे फ्रांस का प्रमुख केंद्र कहते हैं। यही वजह है कि बहुत से लोग, चाहे वे धार्मिक हों अथवा नहीं, इस महान गिरिजाघर के जलने पर रो रहे थे। उन्हें अपना खुद का एक हिस्सा जलता हुआ महसूस हुआ।

इसे पादरी विरोधी उन्माद में क्रांति के दौरान लूटा गया और 19वीं शताब्दी में पुनर्निर्माण कर फिर से इसे बहाल किया गया। शाही राज्याभिषेक, राष्ट्रीय मुक्ति और राष्ट्रपतियों की अंत्येष्टि स्थल के रूप में यह एक तरह से राष्ट्र की आत्मा बन गया। यह ऐसी जगह है, जहां फ्रांस ने अपने उतार-चढ़ाव से भरे राजतंत्रीय तथा गणतंत्रात्मक और धार्मिक तथा धर्मनिरपेक्ष अतीत को सहेज रखा है।

शताब्दियों से यह गिरिजाघरों का प्रतिनिधित्व करता रहा है। पेरिस में जन्मे और पले-बढ़े कलाकार क्लेयर इल्यूज कहते हैं, वक्त ने कैथेड्रल को फ्रांस के भीतर और बाहर हर किसी के लिए यादों की खान बना दिया। यह हम सभी के लिए यादों का एक खजाना है। आखिर फ्रांस है क्या? सुंदरता। इस सुंदरता को जलते हुए देखना खौफनाक था। आठ सौ साल पुरानी बीम पर टिका शानदार शिखर जहन्नुम में गिर गया। यहां मानव जाति की सबसे अच्छी चीजें थीं, ऐसी अभिव्यक्ति मानो अलौकिक हों, और सब धुएं में विलीन हो रही थीं।

मानव जीवन के नुकसान को देखना भयानक होता है, लेकिन सौंदर्य का विनाश देखना उससे कम भयावह नहीं होता। बेचैनी, भौंडेपन, नफरत और झूठ के इस समय में यह ज्वाला अपशकुनी लगी। जॉन कीट्स ने लिखा है- *'सुंदर ही सत्य है, सत्य ही सुंदर है'* और यह कि *'आप सभी को इसे जानने की जरूरत है।'*

पेरिस में रहने वाली एक मित्र साराह क्लीवलैंड ने मुझे लिखा-'सब कुछ अजीब तरह से शांत और स्थिर नजर आ रहा था, मानो लोग समाधि में हों और देगची की तरह कैथेड्रल के भीतर आग को उबलते हुए देख रहे हों। वह दृश्य ऐसा था, मानो सब प्रार्थना में लीन हों। कोई चीज, जो इतनी यादगार हो, वह इतनी नाजुक भी हो सकती है, यह कल्पना ही असंभव लग रही थी।'

सभ्यता नाजुक है, लोकतंत्र नाजुक है, कैथेड्रल की मीनार की तरह। इसे नजरंदाज करना आज असंभव है, ऐसा करना वाकई बहुत खतरनाक हो सकता है। जब एक सार्वभौमिक संदर्भ धुएं में विलीन हो जाता है, तो एक रसातल खुलता है।

मुझे इसके विशाल आंतरिक भाग की शीतलता की याद आ रही है। यह तब की बात है, जब 1976 में मैं पहली बार पेरिस में रह रहा था। लू चल रही थी। नदियां सिमट गई थीं, झरने सूख गए थे, दुकानों में पानी की बोतलें खत्म हो गई थीं। लोग स्तब्ध होकर तमाशबीन बने बैठे थे। कुछ लोग प्रार्थना कर रहे थे। बच्चे खेल रहे थे। बूढ़े और जवान, मासूम और ज्ञानी लोग इकट्ठा थे। प्रवेश द्वार के ऊपर गुलाबी खिड़कियों के शानदार शीशे से छनकर नीली रोशनी आ रही थी। हवा में पत्थर और मोमबत्ती की खुशबू घुली हुई थी।

वहां की पवित्रता ने मुझे अपने में समाहित कर लिया। ऐसे समय में, जब अमेरिकी राष्ट्रपति शरणस्थलों पर थूकते हैं और दंड स्वरूप गरीब प्रवासियों को उन शहरों में फेंकना चाहते हैं, जो उन्हें उनके नाम से बुलाने की हिम्मत रखते हैं, नात्रो दाम ऐसा ही एक शरणस्थल है। आधे जले कैथेड्रल को पहली बार मैंने युवावस्था में देखा था। इसके द्वीप पुलों के अगले हिस्से का संकेत करते हैं, उसकी धमनियों पर नात्रो दाम ने लंगर डाला। कैथेड्रल हमेशा से सीन नदी के पार आश्वस्त करता है, इसका आगे का हिस्सा जुड़वां स्तंभों की तरह प्रभावशाली है। इसका पार्श्व भाग उड़ते हुए टेक और परनाले की तरह है, आप चाहे जिस कोण से भी देखें, यह चिरस्मरणीय है।

जलने के बाद भी 'अवर लेडी ऑफ पेरिस' (नात्रो दाम) अपने स्तंभों के साथ अब भी वहां मौजूद है, भले उसका ऊपरी हिस्सा न बचा हो। फ्रांस के राष्ट्रपति मैंक्रां ने गिरिजाघर के पुनर्निर्माण की कसम खाई है। उसके लिए पैसा बरस रहा है। फ्रांस के राष्ट्रपति ने गरिमापूर्ण आचरण दिखाया, जिससे गरिमा की ताकत का ऐसे समय एहसास हुआ, जब व्हाइट हाउस से यह गायब हो चुकी है।

मैक्रां ने कहा, नात्रो दाम हमारा इतिहास है और हमारी कल्पनाशीलता है : दूसरे शब्दों में यह उन सभी के लिए याद करने लायक और प्रेरणास्पद है, जो आत्म से परे उत्कृष्टता की आकांक्षा रखते हैं। स्वयं को ही सब कुछ समझने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने नात्रो दाम की आग बुझाने के लिए 'फ्लाइंग वाटर टैंकर' भेजने का सुझाव दिया था। उनकी सलाह की अनदेखी कर दी गई। शायद एक अमेरिकी के लिए नात्रो दाम से करीबी चीज अपने राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने की शक्ति में है। स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी भी एक फ्रेंच शिल्पकार का ही काम है। खैर, इसे इस जादुई नतीजे के साथ अन्य दिनों के लिए छोड़ दें, कि स्वतंत्रता की जो मशाल हवा में तैर रही थी, जाहिर तौर पर अलग हो गई। मुझे याद नहीं आता कि फ्रांसीसी सभ्यता अपने जीवन में कब मुझे इतनी महत्वपूर्ण लगी। आने वाले हफ्तों में जैसे ही शोक खत्म होगा, इस पर बहुत खराब बहसें होंगी, इस बात पर कि कौन जिम्मेदार था, कैसे यह घटना हुई, कौन-सी लापरवाही बरती गई। लेकिन पेरिस की सड़कों पर उन मूक, श्रद्धेय, प्रार्थना करने वाले लोगों की भीड़ में मुझे वह संभावना भी दिखी, जब सभी फ्रांसवासी केवल कैथेड्रल ही नहीं, बल्कि पीली जर्सी वाले आंदोलन की हिंसा और उसकी वजह से हुए विभाजन से पीड़ित राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिए एकजुट होंगे। नात्रो दाम की कहानी धीरज और पुनर्जन्म की कहानी है। यह यूरोपीय सभ्यता की भी कहानी है। नात्रो दाम हिटलर से बच गया। यह इतना नाजुक था, जिसका एहसास अब हुआ है, इसलिए यूरोप को इस समय एकजुटता दिखाने की जरूरत है।

© The New York Times 2019

अंतर्ध्वनि

>अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध

बच्चे प्यारे और आनंद के लबालब भरे प्याले होते हैं

संसार के दृश्य बड़े निराले हैं; उसकी वस्तुएं ऐसी सुंदर, ऐसी जी लुभाने वाली, और ऐसी अनूठी हैं, कि बड़े दुखों को झेलकर भी हम उनको नहीं भूलते। उनका चाव, उनसे मिलनेवाले सुख, हमको संसार के लिए बावला बनाए रहते हैं। अकाल के दिनों में एक भूख से तड़पता हुआ मानव यह कह सकता है कि मृत्यु आ जाती तो अच्छा। पर यदि सचमुच मृत्यु उसके सामने आकर खड़ी हो जाए, तो उसकी गति भी लकड़ीवाले की सी ही होगी, जैसे बोझ से घबरा कर लकड़ीवाले ने सिर के गट्ठे को गिराकर मृत्यु को याद किया था, और जब मृत्यु आई, तब उसने कहा-मैंने किसी और काम के लिए तुझे नहीं बुलाया था, तू मेरे इस गिरे हुए गट्ठे को उठा दे, बस यही काम है। उसी तरह आशा है कि मृत्यु से वह भी यही कहेगा, कि मैंने तुझको इसीलिए बुलाया था, कि शायद तू मुझको कुछ खाने को दे दे। क्योंकि सच्ची बात यह है कि मृत्यु को वह खिजलाहट में पुकार उठता था, या इसलिए मृत्यु-मृत्यु चिल्लाता था कि जिससे लोग समझें कि उसका दुख कितना भारी है। और उसके ऊपर दया करें। दुःख के दिनों की यह दशा है। पर जहां चारों ओर सुख के ही डेरे हैं, वहां का क्या कहना! वहां तो सृष्टि हमारी आंखों में सोने की है। रत्नों जड़ी है। वहां तो यह सुनना भी अच्छा नहीं लगता, कि कभी हमें इसको छोड़कर उठ जाना पड़ेगा। फिर जी प्यारा क्यों न होगा। कहावत है कि-'जी से जहान है'।

आप अपने बच्चों को बहुत प्यार करते हैं, सचमुच बच्चे हैं भी प्यार की वस्तु, उनकी भोली भाली सूरत पर कौन निछावर नहीं होता, उनकी तोतली और प्यारी बातें किसको नहीं भातीं। वे कलेजे के टुकड़े हैं, हाथ के खिलौने हैं, प्यार की जीती जागती तस्वीर हैं, और आनंद के लबालब भरे प्याले हैं। फिर कौन उन्हें दिल खोल कर न चाहेगा।

दिवंगत हिंदी कवि

मंजिलें और भी हैं

>> डॉ. रेणुका रामकृष्णन

एक मौत ने कुष्ठ रोगियों के इलाज की प्रेरणा दी

मैं एक डॉक्टर हूं और चेन्नई में रहती हूं। मेरा जन्म कुंभकोणम में हुआ था। मैं वहीं पली-बढ़ी। मेरे पिता, चाचा और भाई सेना की नौकरी में गए। जबकि मैं बचपन से ही डॉक्टर बनना चाहती थी। डॉक्टरी का पेशा मुझे इतना आकर्षित करता था कि बचपन में खेले जाने वाले खेलों में भी मैं डॉक्टर बनती थी। मेरे पिता ने भी सपना पूरा करने में मेरा बहुत सहयोग किया। दरअसल करीब पच्चीस साल पहले की एक घटना ने डॉक्टर बनने का मेरा इरादा और पक्का कर दिया। तब मैं करीब सोलह साल की थी। वह महामहम का पर्व था, जो बारह साल में एक बार आता है। उस दिन कुंभकोणम में स्नान के लिए भारी भीड़ उमड़ती है। मैं उस दिन मंदिर परिसर में ही थी कि पवित्र कुंड के बिल्कुल पास मैंने एक लाश देखी। लोगों ने बताया कि वह कुष्ठरोगी था। लोग उसे छुए बगैर न केवल निकल रहे थे, बल्कि वे गुस्से में भी थे कि इस व्यक्ति ने कुंड को अपवित्र कर दिया। मैंने अपने दुपट्टे से लाश को ढक दिया और लोगों से कहा कि वे उसे श्मशान तक ले जाने में मेरी मदद करें। एक व्यक्ति ने बेमन से लाश उठाने में मेरी मदद की और उसे रिक्शे में रखवा दिया। लेकिन श्मशान के लोगों ने उसका अंतिम संस्कार करने से मना कर दिया। मेरे पास सिर्फ दस रुपये थे। मैं उसे लेकर तीस किलोमीटर दूर एक दूसरे श्मशान में गई और हाथ जोड़ते हुए उनसे विनती की। उन्होंने अंतिम संस्कार कर दिया।

मेरी इच्छा कुष्ठरोगियों के लिए एक बेहतर चिकित्सालय बनाने की है।

उस दिन घर लौटते हुए मैंने दो फैसले किए। एक तो यही कि चाहे कुछ हो जाए, मुझे डॉक्टर बनना है। और दूसरा यह कि कुष्ठ रोगियों की बेहतरी के लिए मुझे काम करना है, क्योंकि समाज इन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। घर लौटकर मैंने पिता को इस घटना के बारे में बताया, तो उन्होंने इस बारे में किसी से कुछ न कहने की सलाह दी, क्योंकि वैसे में समाज हमारा बहिष्कार कर सकता था। लेकिन उन्होंने मेरे फैसले को सराहा और यथासंभव मदद करने का भी भरोसा दिया।

मैं डॉक्टरी की परीक्षा की तैयारी में जुट गई। आखिरकार पुडुचेरी के जेआईपीएमईआर कॉलेज में मेरा दाखिला हो गया। वहां डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी करने के बाद मैंने सेंट जॉन'स हॉस्पिटल ऐंड लेप्रोसी सेंटर में जॉइन किया। वहां मैं त्वचा विभाग में थी। लेकिन डॉक्टरों की कमी होने के कारण मुझे इमर्जेंसी विंग में भी काम करना पड़ता, जिसका मुझे अतिरिक्त पैसा मिलता था। वह पैसा मैं कुष्ठ रोगियों के कल्याण में लगाती थी। शादी के बाद मैं चेन्नई आ गई और शेनॉय नगर के एक स्वास्थ्य केंद्र में कुष्ठरोगियों के लिए काम करने लगी। पति को मेरे काम से कोई आपत्ति नहीं थी।

मैं कुष्ठ रोगियों का इलाज तो करती ही हूं, इनके बारे में समाज में फैली गलत सोच के खिलाफ भी अभियान चलाती हूं। कुष्ठ कोई असाध्य बीमारी नहीं है। अगर इसका समय पर ही इलाज करवा लिया जाए, तो शारीरिक विकृतियां नहीं होती हैं। ऐसे ही यह संक्रामक उसी स्थिति में होता है, जब लंबे समय तक किसी कुष्ठ रोगी के संपर्क में रहा जाए। इस रोग के ज्यादातर शिकार वही होते हैं, जिनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो। मेरी इच्छा कुष्ठरोगियों के लिए एक चिकित्सालय बनाने की है, जिसमें देश भर के मरीजों के रहने और बेहतर इलाज की व्यवस्था हो।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

सहकारी संघवाद में भेदभाव क्यों

संसाधनों के वितरण का मुद्दा एक नाजुक और संवेदनशील मुद्दा है और इस मुद्दे पर व्यापक आम सहमति बनाकर ही आगे बढ़ना चाहिए। यह भारतीय लोकतंत्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

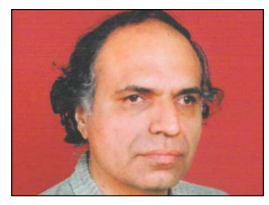

भारत डोगरा

राज्य सरकारों की यह मांग बहुत समय से रही है कि उन्हें केंद्रीय करों का बेहतर हिस्सा मिले तथा इसे अपनी प्राथमिकताओं के आधार पर खर्च करने की राज्य सरकार की क्षमता भी बढ़े। यह मांग पूरी होने की उम्मीद वर्ष 2015-16 में बंधी, जब 14 वें वित्त आयोग की सिफारिशों को लागू किया गया।

उस समय निर्णय लिया गया कि केंद्रीय करों के विभाजीय पूल में राज्यों की हिस्सेदारी को 32 प्रतिशत से बढ़ा कर 42 प्रतिशत किया जाएगा। पर उसी समय केंद्र समर्थित योजनाओं में केंद्र सरकार का हिस्सा बहुत कम कर दिया गया, जिससे इन योजनाओं के अंतर्गत राज्य सरकारों को मिलने वाली धनराशि बहुत कम हो गई। यह एक हाथ से देने तथा दूसरे हाथ से लेने वाली स्थिति थी। यह कटौती बहुत जल्दबाजी में नहीं करनी चाहिए थी। एक अन्य ध्यान देने योग्य बात थी कि संसाधन प्राप्त करने के एक तरीके के रूप में केंद्र सरकार ने सेस (या उपकर) व सरचार्ज का उपयोग बढ़ा दिया। कई तरह के सेस जैसे शिक्षा संबंधी सेस, स्वच्छता संबंधी सेस लगाए गए। ऐसे उपकरों को केंद्र सरकार के पास ही रखा गया व इनकी हिस्सेदारी राज्य सरकारों से नहीं की गई। इसके अतिरिक्त कुछ उपकरों का पूरा उपयोग निर्धारित लक्ष्य के लिए नहीं किया गया।

जब आय का बढ़ता हिस्सा उपकर व सरचार्ज के रूप में प्राप्त किया गया व इस तरह प्राप्त राशि की हिस्सेदारी राज्य सरकारों से नहीं हुई, तो इससे भी राज्य सरकारों की हिस्सेदारी की क्षति हुई। इस तरह चौदहवें वित्त आयोग की सिफारिशों का बढ़ते संसाधन के रूप में उतना लाभ राज्य सरकारों को नहीं मिला, जितनी कि उम्मीद थी। इसके बावजूद राज्य सरकारों को इस बात की प्रसन्नता थी कि केंद्र से प्राप्त होते संसाधनों में वह हिस्सा बढ़ रहा है, जिसे वे अपनी प्राथमिकता के अनुसार खर्च कर सकती हैं।

पर यह प्रसन्नता भी बहुत समय तक नहीं बनी रह सकी। वित्त वर्ष 2017-18 में जीएसटी के आगमन के साथ टैक्स दर निर्धारित करने की क्षमता राज्य सरकारों के पास नहीं रह सकी व जीएसटी परिषद में केंद्रीकृत हो गई। राज्य सरकारों को अपना सीमित उपकर या सेस लगाने के लिए भी जीएसटी परिषद की अनुमति लेना जरूरी हो गया है।

उदाहरण के लिए, हाल ही में जब केरल में भयंकर आपदा के बाद वहां की राज्य सरकार को सेस की जरूरत महसूस हुई, तो जीएसटी परिषद की स्वीकृति प्राप्त करना जरूरी माना गया। इस तरह राज्य सरकारों को एक ओर कुछ लाभ मिलता नजर आता है, तो शीघ्र ही इसमें कई बाधा भी आ जाती है।

केंद्र व राज्य में न्यायसंगत हिस्सेदारी व इस आधार पर सभी राज्यों के जन-हितों को आगे बढ़ाने को को-ऑपरेटिव फेडरेलिज्म या सहयोगी संघवाद कहा गया है। इसका अभी प्रचार जितना है, उतनी उपलब्धि नहीं है। चुनाव के कारण इस संदर्भ में समस्याएं और बढ़ सकती हैं, क्योंकि प्रायः केंद्र सरकार का वित्त मंत्रालय उन राज्यों की परियोजनाओं की प्राथमिकता देने लगता है, जहां सत्ताधारी दल वही हैं, जो केंद्र में हैं। इस कारण कुछ अन्य राज्यों की कठिनाइयां बढ़ जाती हैं।

यह न्यायसंगत लोकतंत्र व संघवाद के अनुकूल नहीं है। सहयोगी व न्यायसंगत संघवाद का उद्देश्य प्राप्त करने के लिए अभी हमें अनेक सुधार करने होंगे। एक उपाय यह है कि अंतर्राज्यीय परिषद या इंटर-स्टेट कांऊसिल को अधिक मजबूत कर सहयोगी संघवाद को मजबूत करने में अधिक असरदार भूमिका दी जाए। एक अन्य उपाय यह भी है कि उपकर व सरचार्ज से प्राप्त आय को भी केंद्र सरकार राज्य सरकारों से साझा करे। संसाधनों के वितरण का मुद्दा एक नाजुक मुद्दा है और इस मुद्दे पर व्यापक आम सहमति बनाकर ही आगे बढ़ना चाहिए। यह भारतीय लोकतंत्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

खुली खिड़की

मोटापे की समस्या

दुनिया भर में मोटापा एक जटिल स्वास्थ्य समस्या के रूप में उभर रहा है। अमेरिका की 35 फीसदी आबादी मोटे लोगों की है, जबकि भारत की तुलना में चीन और पाकिस्तान की आबादी का ज्यादा हिस्सा मोटे लोगों का है।

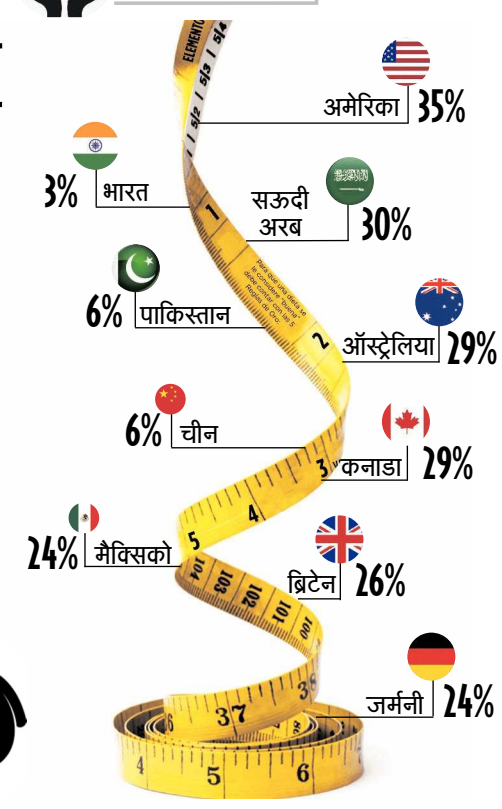

स्रोत-World Bank

हम कुछ नहीं हैं

सत्संग

यूनान का सबसे धनी आदमी एक दिन सुकरात से मिलने गया। सुकरात उस समय कुछ काम में थोड़े व्यस्त थे। उन्होंने उससे थोड़ी देर इंतजार करने के लिए कहा। उस व्यक्ति को यह सुनकर बुरा लगा। उसने सुकरात से कहा, आप जानते हैं, मैं कौन हूं? यह सुनकर सुकरात ने उसी क्षण फर्श पर पृथ्वी का एक नक्शा बनाया और उससे पूछा, जरा बताओ कि इसमें एथेंस कहां है? उस व्यक्ति ने एक जगह पर उंगली रखते हुए कहा, दुनिया के नक्शे पर तो एथेंस एक बिंदु भर है। सुकरात ने फिर पूछा, यह बताओ कि एथेंस में तुम्हारा महल कहां है? जब एथेंस ही एक बिंदु भर था, तो उसमें वह महल कैसे बताता, फिर भी उसने अंदाज से एक जगह बताई।

सुकरात ने उससे फिर पूछा, यह बताओ कि इस महल में तुम कहां हो? वह व्यक्ति अब चुप हो गया। सुकरात ने थोड़ी देर तक उससे बात की। जब वह व्यक्ति जाने लगा, तो सुकरात बोले, दोबारा जब भी तुममें यूनान के सबसे धनी व्यक्ति होने का अहंकार जागे, तो दुनिया के इस नक्शे को फिर याद कर लेना और खुद से पूछना कि उस नक्शे में एथेंस कहां है, तुम्हारा महल कहां है, और खुद तुम कहां हो। जब वह आदमी निरुत्तर होकर जाने लगा, तो सुकरात ने कहा, अब तुम समझ ही गए होगे कि वास्तव में हम कुछ नहीं हैं, लेकिन कुछ होने की अकड़ हमें पकड़े हुए है। यही हमारा दुख है। यही हमारा नर्क है।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

रॉजर, पिता और टेनिस

रॉजर की कहानी, जो दिव्यांग पैदा हुआ था, पर पिता के प्रोत्साहन से वह एक बड़ा टेनिस खिलाड़ी बन गया।

रॉजर क्रॉफोर्ड जब पैदा हुआ, तब उसके दोनों हाथ और एक पैर नहीं थे। उनके माता-पिता को नवजात शिशु के रूप में एक ऐसा बच्चा दिखा, जिसकी दाईं बांह से अंगूठे जैसी कोई चीज निकल रही थी और बाईं बांह से एक अंगूठा और एक उंगली बाहर झांक रहे थे। उसकी हथेलियां नहीं थीं और सिकुड़े हुए दाएं पैर में सिर्फ तीन उंगलियां थीं, जबकि बायां पैर अविकसित था, जिसे बाद में काट देना पड़ा। पर पिता ने रॉजर को हौसला दिया और कहा कि तुम बिल्कुल सामान्य बच्चे की तरह हो। पिता ने उसे वॉलीबॉल पकड़ना और फेंकना सिखाया। वह उसे फुटबॉल भी सिखाते। बारह की उम्र में रॉजर स्कूल की फुटबॉल टीम में शामिल हो गया। एक दिन उसे गोल करने का मौका मिल गया। वह अपने नकली पैर से पूरी तेजी से गोलपोस्ट की ओर भागा। तभी दूसरी टीम के खिलाड़ी ने पीछे से रॉजर का बायां टखना पकड़ लिया। रेफरी भागकर आया और अपने दोनों हाथ उछाल दिए। पेनल्टी! रॉजर के गोल से भी ज्यादा देखने लायक उस लड़के का चेहरा था, जो उसकी कृत्रिम टांग पकड़े हुए था। लंच रूम में भोजन करना रॉजर के लिए कष्टकारी था। टाइपिंग क्लास में भी वह विफल हुआ। हां, वह टेनिस का रैकेट घुमा सकता था। पर जब भी वह जोर से रैकेट घुमाता, तो रैकेट उसकी कमजोर पकड़ से छूटकर हवा में उड़ जाता था। किस्मत से रॉजर को खेल के सामान की दुकान पर एक ऐसा रैकेट दिखा, जिसके छड़ों वाले हैंडल के बीच में वह अपनी उंगली फंसा सकता था। अब रॉजर कॉलेज में टेनिस खेलने लगा। अपने टेनिस कॅरियर में रॉजर 22 बार जीता और 11 बार हारा। युनाइटेड प्रोफेशनल टेनिस एसोसिएशन ने उसे टीचिंग प्रोफेशनल की भूमिका दी। उसने कई दिव्यांगों को प्रेरित किया।

अगर मन में इच्छाशक्ति हो, तो हमारे लिए कोई भी काम असंभव नहीं है।